RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-1/

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 74, अंक . 25 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 17 सितम्बर, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074, सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष-74, अंक : 25, 14-17 सितम्बर 2017 तदनुसार 2 अश्विन सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

सृष्टि से पूर्व संसार की दशा

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

गीर्णं भुवनं तमसापगूळ्हमाविः स्वरभवज्जाते अग्नौ।
तस्य देवाः पृथिवी द्यौरुतापोऽरणयन्नोषधीः सख्ये अस्य।।

-ऋ० १०।८२।२

शब्दार्थ-भुवनम् = संसार **गीर्णम्** = निगीर्ण, निगला हुआ-सा और **तमसा** = अन्धकार से **अपगूळ्हम्** = बुरी तरह ढका था। **अग्नौ+जाते** = अग्नि के उत्पन्न होने पर **स्वः** = प्रकाश, आनन्द **आविः** = प्रकट **अभवत्** = हुआ। **तस्य+अस्य** = उस इस प्रसिद्ध अग्नि के **सख्ये** = सख्य में, मैत्री में, सहयोग में **पृथिवी** = पृथिवी **द्यौः** = द्यौ **आपः** = जल तथा अन्तरिक्ष **उत** = और **ओषधीः** = ओषधियाँ **अरणयन्** = मानो प्रसन्न हो उठीं।

व्याख्या-सृष्टि-उत्पत्ति से पूर्व क्या था, कैसा था? ये प्रश्न प्रायः सभी विवेकशील महानुभावों के हृदय में उठते हैं। इन प्रश्नों का जैसा युक्तियुक्त और तर्कपूर्ण समाधान वेद में है और किसी भी धर्मग्रन्थ में नहीं है। उत्पत्ति से पूर्व यह-**'गीर्णं भुवनं तमसापगूळ्हम्'** संसार निगला हुआ-सा और अन्धकार से अत्यन्त आच्छादित था। सूर्य-चन्द्र, ग्रह-नक्षत्र, तारा आदि, सस्यश्यामला मही, कलकल ध्वनि करके बहते जल, सरसर करता धीर समीर (वायु) आदि पदार्थों का नाम संसार है। सृष्टि से पूर्व सुतराम् यह संसार अपने कारण में विलीन था, इसको वेद ने **'गीर्णं भुवनम्'** कहा है। जब सूर्य-चन्द्रादि प्रकाशमय पिण्ड न थे तो अन्धकार ही होगा। इस अवस्था को **तमसापगूळ्हम्** = 'अन्धकार से अत्यन्त आच्छन्न था' शब्दों में व्यक्त किया गया है। ऋग्वेद [१०।१२९।३] में इसी भाव को अधिक स्पष्ट शब्दों में कहा है-**तम आसीत्तमसा गूळ्हमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्** = सृष्टि से पूर्व तम= अन्धकार के कारण सब गुप्त था और यह सारा सरणशील पदार्थ लिंगरहित हो रहा था।

मनुस्मृति [१।५] में इसका अनुवाद-सा ही है-

आसीदिदं तमोभूतमप्रज्ञातमलक्षणम्।
अप्रतर्क्यमविज्ञेयं प्रसुप्तमिव सर्वतः।।

यह समस्त संसार तमोभूत=अन्धकाराच्छन्न प्रकृति में था और प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, अर्थापत्ति आदि का अविषय हो रहा था, क्योंकि वह सर्वथा प्रसुप्त = निश्चेष्ट था। सृष्टि में सबसे पूर्व एक आग्नेय पिण्ड पैदा हुआ और-**'आविः स्वरभवज्जाते अग्नौ'** = अग्नि के उत्पन्न होने पर प्रकाश हो गया। इस आग्नेय पिण्ड की उत्पत्ति के पीछे सारी सृष्टि क्रमशः उत्पन्न हुई-**'तस्य देवाः पृथिवी द्यौरुतापो-ऽरणयन्नोषधीः सख्ये अस्य'** = इस महान् आग्नेय पिण्ड के सहयोग से पृथिवी, द्यौ, जल और ओषधियाँ रमण करने लगीं। सूर्य से पृथिवी पिण्ड पृथक् हुआ, सहस्रों वर्ष उस पर मूसलाधार वर्षा होती रही। तब कहीं पृथिवी ठण्डी हुई और उसके पश्चात् औषधि-वनस्पति आदि की उत्पत्ति हुई। सृष्टि-उत्पत्ति का यह क्रम आजकल के वैज्ञानिक बतलाते हैं, वेद-विज्ञान का सिद्धान्तग्रन्थ है। इसमें ऐसे गम्भीर वैज्ञानिक तत्त्वों को देखकर पश्चिमी विद्वान् चकित रह जाते हैं।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

वैदिक भारत-कौशल भारत

आर्य महासम्मेलन 5 नवम्बर को नवांशहर में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन वैदिक भारत-कौशल भारत **5 नवम्बर 2017** रविवार को नवांशहर में करने का निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय-समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 5 नवम्बर 2017 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में नवांशहर में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें।

-प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्।। -ऋ० १.१.१

भावार्थ-ज्ञानस्वरूप परमात्मा सर्वत्र व्यापक, सब प्रकार के यज्ञादि श्रेष्ठ कर्मों का प्रकाशक और उपदेशक, सब सुखों का दाता और सब ब्रह्माण्डों का कर्त्ता धर्त्ता और हर्त्ता है, हम सब को ऐसे प्रभु की ही उपासना, प्रार्थना और स्तुति करनी चाहिये।

अग्नि पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत।
स देवाँ एह वक्षति।। -ऋ० १.१२

भावार्थ-पूर्व कल्पों में जो वेदार्थ को जानने वाले महर्षि हो गये हैं और जो ब्रह्मचर्यादि साधनों से युक्त नवीन महापुरुष हैं, इन सब से पूज्य परमात्मा ही स्तुति करने योग्य है। उस दयालु प्रभु ने ही इस संसार में दिव्य-शक्ति वाले, वायु अग्नि, सूर्य, चन्द्र और बिजुली आदि देव और हमारे शरीरों में भी विद्या आदि सद्गुण, मन, नेत्र, श्रोत्र, घ्राणादि देव प्राप्त किये हैं। जिन देवों की सहायता से हम अपना लोक और परलोक सुधारते हुए, अपने मनुष्य-जन्म को सफल कर सकते हैं।

स्तुति-प्रार्थना-उपासना मन्त्र-एक विवेचन

-ले० अभिमन्यु कुमार खुल्लर 22, नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 (म. प्र.)

ईश्वर स्तुति-प्रार्थना-उपासना के मन्त्रों का ऋषिकृत अर्थ संयोजन सहित विवरण ऋषि-समर्पण में संकलित है। पृष्ठभूमि में इस चिन्तन पर गहराई तक, दीर्घ समय तक संलग्न रहने का स्वाभाविक परिणाम यह निकला ही था कि उन्हें लेख बद्ध किया जावे और जब सामान्यजन को भी सुलभ करा दिया जावे। आठों मंत्र उस प्रकार से हैं-

1. ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दु-रितानि परा सुव
यद् भद्रं तन्न आ सुव
यजुर्वेद अध्याय 30 मंत्र 3

2. हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।
ऋग्वेद मण्डल 10 सूस्त 121 मंत्र1 यजुर्वेद अध्याय 13 मंत्र 4 अध्याय 23 मंत्र1, अध्याय 25 मंत्र 10 अथर्ववेद 4/2/7

3. य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।
ऋग्वेद मंडल 10 सूक्त 121 मंत्र 2, यजुर्वेद अध्याय 25 मंत्र 13 अथर्व 4/2/1

4. यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।
ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 121 मंत्र 3 यजुर्वेद अध्याय 23 मंत्र 13 एवं अ 25 मंत्र 11
अथर्ववेद 4/2/2

5. येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।
ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 121 मंत्र 5 यजुर्वेद अध्याय 32 मंत्र 6

6. प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम।
ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 121 मंत्र 10

7. स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवाऽअमृतमा-नशाना-स्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त।
यजुर्वेद अध्याय 32 मन्त्र 10

8. अग्ने नय सुपथा रायेऽ-अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान।
ययोध्यस्मज्जुहु राणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽउक्तिं विधेम।

ये मंत्र वेदों के 20416 मंत्रों में से चयनित किए गए है जो ऋषिवर दयानन्द की अगाध ज्ञान समुद्र की तलस्वर्शी पहुंच का निचोड़ है। उनकी इस अप्रतिम सूझबूझ, अतुलनीय योग्यता का परिचायक है जिसकी कल्पना किसी भी संन्यासी या विद्वान में नहीं जा सकती। मंत्र तो वेद के हैं पर संयोजन, वह भी कुल 8 मंत्रों में करना महर्षि का कार्य है। यह क्या कम दुसाध्य कार्य नहीं था?

प्रथम मंत्र में 'देव' और 'सवित' सम्बोधक परमात्मा से प्रार्थना की गई है कि वह हमारे सम्पूर्ण दुर्गुणों, दुर्व्यसनों और दुःखों को दूर करे। महर्षि देव शब्द का अर्थ सब सूर्यादि जगत का, विद्या का प्रकाशक और सब आनन्द का देने वाला करते हैं। महर्षि ने निरुक्त के अर्थ के साथ 'सूर्यादि जगत का उत्पत्ति कर्ता' भी जोड़ दिया। अर्थ को व्यापक रूप देने में यह योगदान उनका अपना है। महर्षि 'सवित' शब्द का अर्थ सर्वजग्दुत्पादक, सर्वशक्तिमान करते हैं। ऐसे देव और सविता के अतिरिक्त दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःख मिटाने का सामर्थ्य किसी और में नहीं हो सकता। नहीं सृष्टि रचना का सामर्थ्य, हिरण्यगर्भ परमात्मा के अतिरिक्त किसी और में हो सकता है।

केवल प्रार्थना से ही दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःख निवृत्ति की प्रार्थना कोई अर्थ नहीं रखती। ईश्वर प्रार्थना तभी स्वीकार करते हैं जब पूर्ण पुरुषार्थ के बाद भी सदकार्यों में सफलता न मिले, तब प्रभु से प्रार्थना करने पर वह सहायता करता है। दुर्गुण व दुर्व्यसन छोड़ना उनके लिये सम्भव नहीं है जो कहते हैं-छूटे से नहीं छूटती मुंह को लगी हुई।' केवल और केवल दृढ़ इच्छा शक्ति Strong will power से उनको दूर किया जा सकता है।

यह तो हुई दुर्गुण और दुर्व्यसन दूर करने वाले के सामर्थ्य की चर्चा और दूर करने के उपाय। दुःख दूर करने का सम्पूर्ण सामर्थ्य केवल सर्वशक्तिमान परमात्मा में ही हो सकता है, अन्य में संभव भी नहीं है। दुःख दूर करने का तरीका उसका अपना है और बिलकुल निराला। अभावग्रस्त पीड़ा से ग्रसित नीर शिरोमणि राणा प्रताप के समक्ष, किसकी प्रेरणा से, भामाशाह समस्त धन-दौलत ले कर उपस्थित हो गया था? महाराणा ने भामाशाह से आर्थिक सहायता का कोई प्रस्ताव भी नहीं रखा था। हुआ न यह दैवी प्रेरणा से। निराकार, सर्वव्यापक परमेश्वर का, सहायता करने का यही तरीका है।

दुर्गुणों, दुर्व्यसनो और दुःखों को दूर करने की प्रार्थना के साथ यह भी प्रार्थना भी गई है कि जितने भी कल्याणकारी गुण, कर्म स्वभाव वाले पदार्थ है, उन्हें हमें प्राप्त कराईये।

प्रारम्भ ही इस मनोकामना पूर्ति के लिये हुआ है। प्रार्थना किससे की जा रही है? प्रार्थना की पूर्ति का जिसमें सामर्थ्य होगा उसी से तो प्रार्थना की जानी चाहिए। परमात्मा की सामर्थ्य का वर्णन करने के लिये ही मंत्र क्रमांक 2, 4 व 5 का चयन किया गया है जो निम्न प्रकार से है-

हिरण्यगर्भ सम्बोधन से अभि-षिक्त परमात्मा ही करोड़ो-अरबों से भी अधिक संख्या में, अत्यन्त, प्रदीप्त, प्रभावान नक्षत्र मण्डल का जनक, उत्पन्तिकर्ता है। वह केवल रचना ही नहीं करता वरन् इन हजारों टन भार वाले आकाशीय पिण्डों को 'भारहीन अन्तरिक्ष' में जिसका निर्माता भी वही है, गुरुत्वाकर्षण शक्ति, से बांध कर, एक दूसरे से टकराने से बचा कर उसी तरह भ्रमण कराता है जिस तरह वायुयान आकाश में उड़ते हैं। प्रत्येक वायुयान भिन्न ऊंचाई पर, निर्धारित गति से, निर्धारित पथ पर यात्रा पूरी करता है। यह व्यवस्था एयर ट्रैफिक कन्ट्रोल से होती है। वही हिरण्यगर्भ परमेश्वर इस दृढ़ पृथिवी और उग्र द्यौलोक का आधार है। ट्रैफिक कन्ट्रोलर भी है। ईश्वर की व्यवस्था शाश्वत-ऋत नियमों से यथावत संचालित है। कोई व्यतिरेक कभी नहीं हुआ।

नक्षत्र मण्डल के विषय में थोड़ा और देखिए-

केवल इस सौरमण्डल के मध्य में स्थित सूर्य और भूमण्डल-पृथिवी जिस पर हम निवास करते हैं, की बात करते है-सूर्य पृथिवी से 13 लाख गुना बड़ा, वजन 3 लाख 33 हजांर गुना अधिक और 14 करोड़ 96 लाख किलो मीटर दूरी पर है। सूर्य के प्रकाश की गति 3 लाख किलोमीटर प्रति सैकण्ड है। सूर्य के प्रकाश को पृथिवी पर पहुंचने में 8 मिनिट 16 सैकण्ड लगते हैं। सूर्य ताप का केवल मात्र दो अरबवां अंश ही इस पृथिवी को मिलता है। इसी प्रकाशीय ऊर्जा से 'प्रकाश संश्लेषण' नामक जैव रसायनिक प्रक्रिया होती है जो पृथिवी पर जीवन का आधार है। यह ऊर्जा पृथिवी के जलवायु और मौसम को प्रभावित करती है। यहीं पर यह उल्लेख करना समीचीन होगा कि विज्ञान सूर्य की उत्पत्ति 4.6 बिलियन यानि 4 अरब 60 करोड़ वर्ष पूर्व मानता है और ऋग्वेद के अनुसार परमात्मा सृष्टि रचना एक कल्प यानी 4 करोड़ 32 वर्ष के लिये करता है, इसके पश्चात् यह सृष्टि कारण तत्व-प्रलय में विलीन हो जाती है और नई सृष्टि भी रचना करता है। इस सृष्टि रचना को 1 अरब 96 करोड़ वर्ष ही हुए। सृष्टि लगभग 2 अरब वर्ष और चलेगी। ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 190 मंत्र 3 देखिए-

सूर्या चन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमृ कल्पयत।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्ष मथो स्वः।

खगोलीय पिण्डों की रचना, सृष्टि रचना का एक अंश है। परम पिता परमात्मा प्राणधारी चेतन जीवों, अत्यन्त विशालकाय हाथियों से लेकर (डायनासोर प्राणि समाप्त हो चुके हैं) समस्त पशु पक्षी, चींटी तक की रचना करता है। पक्षियों में गगनचुम्बी उड़ान भरने की क्षमता प्रदान की है। वही परमात्मा अप्राणधारी जड़, जगत विशालकाय समुद्र, नदी-नाले, जलप्रपात, वृक्षो, पौधों लताओ (अनेक विद्वान वृक्षों आदि को चेतन प्राणी मानते हैं) आदि की रचना करता है। ऋत-शाश्वत, नियमों से उनका संचालन करता है, युगान्त में-कल्पान्त में, कारण तत्व में, विलय भी करता है।

परमेश्वर की यह सृष्टि अनुपम, अतुलनीय सौन्दर्य से भरी हुई है। सम्भवतः यह आर्य जगत के शिरोमणि भजनोपदेशक जो स्वयं वेदानुकुल गीत-रचना करने में बेजोड़ थे, की रचना के बचपन में सुने हुए अंश है, जो स्मृति पटल पर आ रहे हैं।

पत्ते-पत्ते की कतर न्यारी
तेरे हाथ कतरनी कटीं नहीं
तेरा खुला भण्डारा कहीं नहीं
भर दे जो जड़-जंगल,
आकाश में सागर कहीं नहीं

प्रत्येक पुष्प की संरचना-गठन, रंग संयोजन सभी कुछ अलग-अलग हैं। किन्हीं फूलों में भीनी, थोड़ी तेज और बहुत तेज गंध है और कई गंधहीन, फिर भी सौन्दर्य भरपूर है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

धर्म का स्वरूप क्या है?

धर्म का स्वरूप क्या है? यह एक विचारणीय विषय है। जब कोई ढ़ोगी बाबा या तथाकथित संत कोई अनैतिक कार्य करता है, अनाचार में लिप्त होकर समाज में उसका असली स्वरूप सामने आता है तो धर्म के नाम का मुद्दा शुरू हो जाता है। मीडिया वर्ग इस बात को प्रमुखता से दिखाता है धर्म के नाम पर बहस शुरू कर देता है और यह कहा जाता है कि धर्म की आड़ में बाबा के द्वारा किया गया घिनौना कृत्य, धर्म के नाम पर बाबा की दुकानदारी, धर्म की आड़ में लोगों को किया गुमराह। बाबा के द्वारा किए गए हर कृत्य को धर्म के साथ जोड़कर उसे धर्म का चोला पहना दिया जाता है। बाबा के द्वारा स्थापित किसी मत, पन्थ, सम्प्रदाय को धर्म का नाम दे दिया जाता है। मीडिया के किसी भी बुद्धिजीवी वर्ग ने यह जानने का प्रयास नहीं किया कि वास्तव में धर्म क्या है? इस बात का निष्कर्ष नहीं निकाला कि बाबा का यह कुकृत्य धर्म का विषय है भी या नहीं? इसी विषय को लेकर कुछ धर्म के ठेकेदारों को चैनल पर बिठाकर धर्म के नाम पर बहस शुरू हो जाती है। परन्तु आज तक कोई भी धर्म की सही परिभाषा नहीं बता पाया। इसका कारण यह है कि धर्म के विषय में उनका ज्ञान शून्य है। वे केवल हिन्दु, मुस्लिम, ईसाई, सिक्ख, बौद्ध, जैन आदि सम्प्रदायों को ही धर्म समझते हैं। कभी भी यह जानने का प्रयास नहीं किया कि वेद और शास्त्र धर्म के विषय में क्या कहते है? धर्म के विषय पर बहस शुरू कर देते है।

महर्षि मनु जी महाराज ने मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षण गिनाएं हैं जिन लक्षणों में एक भी लक्षण आजकल के बाबाओं के जीवन में नहीं दिखाई देता-धृतिः क्षमादमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।। पहला लक्षण (धृति) धैर्य रखना, दूसरा- (क्षमा) जो कि निन्दा स्तुति, मान-अपमान, हानि-लाभ आदि दुःखों में भी सहनशील रहना, तीसरा-(दम) मन को सदा धर्म में प्रवृत्त कर अधर्म से रोक देना अर्थात् अधर्म करने की इच्छा भी न उठे, चौथा- (अस्तेय) चोरी त्याग अर्थात् बिना आज्ञा या छल कपट, किसी व्यवहार तथा वेदविरूद्ध उपदेश से पर पदार्थ का ग्रहण करना चोरी, पांचवा- (शौच) राग-द्वेष पक्षपात छोड़ के भीतर और बाहर की पवित्रता रखना, छठा- (इन्द्रिय निग्रह) अधर्माचरणों को रोक के इन्द्रियों को धर्म में ही सदा चलाना, सातवां- (धीः) मादक द्रव्य बुद्धिनाशक अन्य पदार्थ, दुष्टों का संग, आलस्य प्रमाद आदि को छोड़ कर श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन, सत्पुरूषों का संग, योगाभ्यास से बुद्धि बढ़ाना, आठवां- (विद्या) पृथिवी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त यथार्थ ज्ञान और उनसे यथायोग्य उपकार लेना, सत्य जैसा आत्मा में, वैसा मन में, जैसा वाणी में वैसा कर्म में वर्तना, इसके विपरीत अविद्या है। नवां- (सत्य)जो पदार्थ जैसा हो उसको वैसा ही समझना, वैसा ही बोलना, वैसा ही करना भी तथा दशवां- (अक्रोध) क्रोधादि दोषों को छोड़ के शान्त्यादि गुणों को ग्रहण करना। ये दश धर्म के लक्षण हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने संस्कार विधि में इस श्लोक को उद्धृत करते हुए इसका भाष्य किया है। वहां महर्षि दयानन्द ने अहिंसा को भी धर्म का लक्षण मानकर धर्म के ग्यारह लक्षण माने हैं। महर्षि मनु जी कहते हैं कि जो विप्र या द्विज धर्म के इन दश लक्षणों का अध्ययन मनन करते हैं वे उत्तम गति को प्राप्त करते हैं। प्राणी जगत् में यदि कोई सर्वश्रेष्ठ प्राणी है तो वह है-मनुष्य। मानव जीवन सर्व शक्तियों का केन्द्र तथा सर्व सुखों का स्रोत है। यह आत्मा मानव जीवन को प्राप्त करके ही उन्नति की चरम सीमा तथा अपने अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। आत्मा के अन्दर जो महान दिव्य शक्तियां निहित हैं उनका विकास इसी मानव जीवन में होना सम्भव है। यह मानव जीवन ही अपने चरम उत्कर्ष द्वारा स्वयं भी अपने जीवन को सुखमय बना सकता है और विश्व को भी सुख शांति का सन्देश सुना सकता है तथा देश, जाति और राष्ट्र का उत्थान कर सकता है। परन्तु मनुष्य राष्ट्र का उत्थान और उसे सुखी तभी बना सकता है जबकि वह पहले स्वयं अपना उत्थान कर ले।

मानव जीवनं में उत्थान और उसे सुखमय बनाने का यदि कोई सर्वोत्तम साधन है तो वह है धर्म। धर्म वह शीतल जल है जो इस मानव जीवन रूपी वृक्ष को हरा-भरा रखता है तथा उसे पुष्पित तथा फलित बना देता है जिस के मधुर तथा स्वादिष्ट फलों का आस्वादन कर वह स्वयं भी सुख पाता है और अपने मधुर तथा स्वादिष्ट फलों द्वारा राष्ट्र को भी सुखमय बना देता है। इसके विपरीत धर्महीन मानव जीवन नीरस और फीका है। धर्म मनुष्य को विलासितामय जीवन से हटाकर उसे संयमी और सदाचारी बना देता है। वर्तमान में धर्म से विमुख होने के मुख्य रूप से दो कारण हैं एक सदाचार का न होना और दूसरा धर्म के वास्तविक स्वरूप को न समझना। आज जहां सदाचार से रहित जीवन मनुष्य को धर्मपरायण नहीं होने देता वहां धर्म के वास्तविक स्वरूप को न समझने के कारण मनुष्य धर्म से दूर होता जा रहा है। आज लोगों ने धर्म के वास्तविक स्वरूप को न समझ कर वर्त्तमान में प्रचलित समुदायों, और मजहबों को ही धर्म समझ लिया है। जब मनुष्य इस समुदायों द्वारा प्रचलित नाना प्रकार के आड़म्बरों और देश तथा समाज की उन्नति में बाधक फिर रूढ़ी रिवाजों तथा कुप्रथाओं को देखता है तो धर्म से उदास हो जाता है। इन्हीं सम्प्रदायों, मजहबों तथा समुदायों को आज के राजनेताओं ने धर्म समझ कर अपने आपको धर्म निरपेक्ष घोषित कर दिया है। महाभारत में कहा है-**धर्मो धारयते प्रजा** अर्थात् प्रजाओं का धारण धर्म ही करता है। धर्म ही उसे सत्पथगामी बनाता है। ऋषि दयानन्द अपनी प्रसिद्ध पुस्तक संस्कार विधि में इसी धर्म के यथार्थ स्वरूप का निम्न मार्मिक शब्दों में वर्णन करते हैं- किसी से वैर वृद्धि करके अनिष्ट करने में कभी न वर्तना सुख, दुख हानि लाभ में व्याकुल होकर कभी कर्त्तव्य को न छोड़ना। धैर्य पूर्वक अपने कर्त्तव्य में स्थिर रहना, निन्दा, स्तुति, मान, अपमान का सहन करना। मन को सदा अधर्माचरण से हटा कर धर्माचरण में ही प्रवृत्त रखना। मन, कर्म, वचन से अन्याय और अधर्म के द्वारा किसी वस्तु को स्वीकार न करना। राग, द्वेष आदि के परित्याग से आत्मा और मन को पवित्र और जलादि से शरीर को शुद्ध रखना। श्रोत्र आदि इन्द्रियों को अकर्त्तव्यता से हटा कर्त्तव्य कर्मों में सदा प्रवृत्त रखना। वेदादि सत्य विद्या ब्रह्मचर्य, सत्संग करने और कुसंग दुर्व्यसन, मद्यपानादि के परित्याग से बुद्धि को सदा निर्मल बनाना। सत्य जानना, सत्य बोलना, सत्य कहना क्रोध आदि दोषों का परित्याग कर शान्ति आदि गुणों को धारण करना ही धर्म कहलाता है।

वर्तमान में धर्म के नाम पर जो कुछ हो रहा है, धर्म के नाम पर जो आडम्बर फैलाया जा रहा है, इसके ऊपर विचार करने की आवश्यकता है। आज ऐसे ढ़ोगी बाबाओं से समाज को सावधान करने की आवश्यकता है जिनका धर्म के विषय में ज्ञान शून्य है। जिनके जीवन में धर्म नाम की कोई चीज नहीं है, वे धर्म के ठेकेदार बने हुए हैं और धर्म के नाम पर समाज का अहित कर रहे हैं। आज मत, पन्थ और सम्प्रदाय को धर्म का स्वरूप दे दिया गया है। इसी तथाकथित धर्म के नाम पर लोगों को आपस में लड़ाया जाता है, एक दूसरे से अलग किया जाता है। ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित धर्म के सिद्धान्तों का पालन करने से संसार की उन्नति हो सकती है। इसलिए महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज के नियम में लिखा कि सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए। सत्य आचरण करना और उसी के अनुसार अपने कर्त्तव्य का पालन करना ही धर्म है। सत्य को छोड़कर मनुष्य धार्मिक होने का दिखावा तो कर सकता है परन्तु धार्मिक नहीं बन सकता।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

मनुष्य का जीवन व चरित्र उज्जवल होना चाहिये

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून-248001

मनुष्य का जीवन व चरित्र उज्जवल होना चाहिये परन्तु आज ऐसा देखने को नहीं मिल रहा है। जो जितना बड़ा होता है वह अधिक संदिग्ध चरित्र व जीवन वाला होता है। धर्म हो या राजनीति, व्यापार व अन्य कारोबार, शिक्षित व अशिक्षित सर्वत्र चरित्र में गडबड़ होने का सन्देह बना रहता है। ऐसा होना नहीं चाहिये। इसके अनेक कारण हो सकते हैं जिसमें मुख्य दो प्रतीत होते हैं। वेदों पर आधारित सामाजिक जीवन का न होना और हमारी दण्ड व्यवस्था का कमजोर या लचर होना। वेद क्या हैं? यह मनुष्य को सत्य का ज्ञान कराकर संस्कार प्रदान करते हैं। वेदों के आधार पर ऋषि दयानन्द जी ने एक नियम दिया है कि 'मनुष्य को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतन्त्र रहें।' वेदों की सभी शिक्षायें ऐसी हैं कि इन्हें प्राप्त व धारण कर मनुष्य इन शिक्षाओं के अनुसार चलकर अपने जीवन व चरित्र को उज्जवल बनाता है। इसके लिए उदाहरण चाहिये तो एक नहीं अनेकों उदाहरण दिये जा सकते हैं जिनमें सबसे ऊपर मर्यादा पुरुषोत्तम राम व योगेश्वर श्री कृष्ण जी का है। यह दोनों महापुरुष वैदिक शिक्षा व संस्कारों से दीक्षित थे और इनका चरित्र संसार के आज तक हुए मनुष्यों व महापुरुषों में आदर्श था। इसके बाद कुछ नया उदाहरण चाहिये तो हम स्वामी दयानन्द जी का दे सकते हैं। स्वामी जी अद्वितीय ब्रह्मचारी व ईश्वर के भक्त थे। उन्होंने जीवन में कभी कोई कुचेष्टा की हो, इसका वर्णन नहीं मिलता। स्वामी जी ने देश का जो उपकार किया है वह अन्य किसी व्यक्ति व महापुरुष ने नहीं किया। स्वामी दयानन्द महापुरुषों में शीर्ष स्थान पर हैं। उनके बाद सद्यः कोई ऋषि नहीं हुआ और न भविष्य में होने की सम्भावना है। वैदिक संस्कृति में आजीवन अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले वीर हनुमान और भीष्म पितामह का भी विश्व के इतिहास में शीर्ष स्थान है। इनमें से एक के जीवन व चरित्र को भी हम धारणा कर लें तो हम मनुष्य नहीं महापुरुष बन सकते हैं। आजकल शिक्षा के दोषों के कारण भी समाज में चारित्रिक प्रदूषण व भ्रष्टाचार विद्यमान है। इसे दूर करने का एक ही उपाय है कि सर्वत्र वैदिक शिक्षा को प्रचलित किया जाये और उसका पालन न करने वालों को त्वरित गति से कठोर दण्ड दिया जाये।

वेद का इतना महत्व क्यों है? इसलिए कि यह किसी मनुष्य व महापुरुष द्वारा रचित ग्रन्थ व ज्ञान न होकर ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है जो सृष्टि के आरम्भ में परम पिता परमात्मा ने मनुष्यों के कल्याण के लिए उनके अन्तःकरण में दिया था। महर्षि दयानन्द वेद मन्त्रों के द्रष्टा व जानकार थे। यही कारण था कि उन्होंने अन्य सभी मनुष्यकृत ग्रन्थों से कहीं अधिक परम प्रमाण वेदों को ही स्वीकार किया व उसका तर्क व युक्ति के द्वारा प्रचार किया। उनके अनुसार वेद स्वतः प्रमाण हैं और अन्य ग्रन्थ वेदानुकूल होने पर परतः प्रमाण की श्रेणी में आते हैं। वेद मनुष्य को ब्रह्मचर्ययुक्त जीवन व्यतीत करने की शिक्षा देते हैं और इससे होने वाले शारीरिक व आध्यात्मिक लाभ भी बताते हैं। ऋषि दयानन्द जी के प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश और वेदभाष्य में इसका स्थान-स्थान पर प्रकाश किया गया है। ब्रह्मचर्ययुक्त जीवन दीघार्यु होने के साथ स्वस्थ, बलवान, यशस्वी, बुद्धिमान, उन्नत वा प्रगतिशील होता है जबकि इसके विपरीत जीवन अल्पायु, रोगी व अपमानित जीवन होता है। आज समाज में इसका प्रत्यक्ष किया जा सकता है। वेदों में इतना ही नहीं है अपितु ईश्वर के सत्य स्वरूप का वर्णन व ज्ञान मिलता है।

वेदों के अनुसार ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। इसी प्रकार से आत्मा का स्वरूप व गुण भी वेदों में बताये गये हैं। कुछ मुख्य गुण हैं कि यह चेतन, सूक्ष्म, ज्ञान व कर्म करने वाला, एकदेशी, अल्पज्ञ, ससीम, अनादि, अनुत्पन्न, नित्य, अमर, अविनाशी, जन्म व मरण धर्मा आदि से युक्त है।

वेद प्रकृति को जड़ व सूक्ष्म बताते हैं और कहते हैं कि यह स्थूल कार्य प्रकृति सूक्ष्म सत, रज व तम गुणों वाली प्रकृति का ही विकार है। वेदों में मनुष्यों के सभी कर्तव्यों का विधान और अकर्तव्यों का निषेध किया गया है। वेदों के ज्ञान में वह शक्ति व गुण है कि जिसे जानकर एवं धारण कर मनुष्य ईश्वर का साक्षात्कार कर जीवनमुक्त होकर मोक्ष प्राप्त कर सकता है जबकि यह ज्ञान संसार के अन्य धर्मग्रन्थों व मतों की पुस्तकों में प्राप्त नहीं होता। ऐसी अनेक विशेषतायें हैं जिनसे मनुष्य जीवन का कल्याण व उन्नति होती है और मनुष्य पतन से बच सकता है। वेदों के इस महत्व के कारण ही वैदिक धर्म के अनुयायियों में श्री राम, श्री कृष्ण, श्री हनुमान, श्री भीष्म, युधिष्ठिर, अर्जुन, विदुर, चाणक्य, दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, पं. लेखराम, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती, आचार्य रामनाथ वेदालंकार जैसे महापुरुष हुए हैं। अन्य मतों के लोगों को हम देखते हैं तो इनके समान ज्ञानी व उच्च जीवन व चरित्र के महापुरुष हमें दृष्टिगोचर नहीं होते। देश का यह दुर्भाग्य रहा कि यहां के सत्तासीनों ने स्वामी दयानन्द के उज्जवल चरित्र को जनता के सामने नहीं आने दिया। इसका परिणाम ही आज का समाज है जहां भ्रष्टाचार, अनाचार, कदाचार व अनैतिक कार्यों का होना आम बात हो गई है और कानून होने पर भी लोग इससे डरते नहीं हैं।

वैदिक धर्म का एक सुविचारित एवं अकाट्य सिद्धान्त है 'कर्मफल व्यवस्था।' दूसरा 'पुनर्जन्म' का सिद्धान्त भी अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। कर्मफल व्यवस्था का आधार हमारे शुभ व अशुभ अथवा पाप व पुण्य कर्म हैं। शुभ कर्म करेंगे तो सुख मिलेगा और अशुभ कर्म करेंगे तो ईश्वर की व्यवस्था से कर्ता को दुःख मिलता है। इसीलिए हमें मनुष्य व किन्हीं को पशु व पक्षी आदि योनियों में जन्म मिला है। सभी प्राणियों में आत्मा एक समान है जो कर्मानुसार एक योनि से दूसरी योनि में आती जाती रहती है और इस कार्य को ईश्वर व उसकी व्यवस्था सम्पादित करती है।

मनुष्य जीवन में जो दुःख आते हैं उनमें से अधिकांश का कारण हमारे अतीत के अशुभ कर्म ही होते हैं। आज भी कदाचार व मिथ्याचार के अन्तर्गत जो लोग जांच के दायरे में हैं व दण्ड भोग रहे हैं उसका कारण उनके अतीत के बुरे कर्म ही हैं। यही व्यवस्था परमात्मा की भी है। अतः वेदों को जानकर व वैदिक शिक्षा में दीक्षित व्यक्ति पाप कर्मों से दूर रहता है और ईश्वरोपासना-सन्ध्या, यज्ञ-अग्निहोत्र, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ, अतिथियज्ञ, गोरक्षा व परोपकार आदि शुभ कर्मों के अनुरूप सुखों को पाता है। सभी मतों को अपना विलय व समावेश वैदिक धर्म में कर देना चाहिये। कम से कम वैदिक धर्म के कर्मफल सिद्धान्त, पुनर्जन्म व विधायक अच्छे कर्मो सन्ध्या वा ईश्वरोपासना व वायुशोधक यज्ञ आदि को तो अपना ही लेना चाहिये। ऐसा करके वह पाप से दूर होंगे और उनका जीवन आदर्श मनुष्य जीवन बन सकेगा और वह पाप व अनाचार तथा चरित्र प्रदूषण करने वाले कर्मों से बच सकेंगे।

''आर्य समाज बरनाला में श्रावणी उपाकर्म (रक्षाबन्धन) सम्पन्न''

दिनांक: 6-08-2017 दिन रविवार को आर्य समाज मंदिर, बरनाला में श्रावणी उपाकर्म (रक्षा-बन्धन) हर्षोल्लास एवं श्रद्धापूर्वक मनाया गया। श्री कृष्ण मोहन जी ने बतौर पुरोहित वेद-मन्त्रोच्चारण द्वारा हवन सम्पन्न करवाया। बरनाला की आर्य शिक्षण संस्थाओं-श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कॉलेज एवं कॉलजिएट, गाँधी आर्य सीनियर सैकण्डरी एवं हाई स्कूल, दयानन्द केन्द्रीय विद्या मंदिर, आर्य मॉडल हाई स्कूल के विद्यार्थियों ने संगीतमय सुमधुर भजनों के द्वारा वेद के स्वाध्याय के लिए प्रेरित किया। श्री राम चन्द्र आर्य ने पर्व के अनुकूल ईश-भजन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर विशेष रूप से हमारे वेद प्रचार मंत्री श्री वसन्त शोरी जी के सुपुत्र श्री प्रशान्त शोरी एवं पुत्र वधू श्रीमती निवेदिता शोरी जी आमंत्रित किये गये थे। जोकि कनेडा में अपनी आजीविका उपार्जन के साथ-साथ दर्शन योग महाविद्यालय गुजरात के दिशा-निर्देश में आर्य समाज की गतिविधियों के प्रचार व प्रसार में सर्वथा तत्पर हैं, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का प्रिय वेद मन्त्र ''ओ३म् विश्वानिदेव..... तन्नासुव।'' का व्याख्यान करते हुए आपने समस्त उपस्थित श्रोताओं को यह अवगत कराया कि मनुष्य अपने अन्दर स्थित समस्त बुराइयों व दुर्गुणों को दूर कर ईश्वर जो कि सर्व रक्षक व सर्व आनन्द दाता है, से जुड़कर सद्गुणों को प्राप्त कर सकता है। अन्त में युगलदम्पति श्री प्रशान्त जी व श्रीमती निवेदिता जी ने अपने सुमधुर अमृतमय-भजनों के द्वारा समस्त उपस्थित श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर लिया। माननीय प्रधान श्री सूर्यकान्त शोरी जी ने अपने धन्यवाद-कथन में वेदाध्ययन के लिए प्रेरित करते हुए आर्य समाज की गतिविधियों में शामिल होने की प्रेरणा दी। शान्ति पाठ एवं प्रसाद-वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-तिलक राम

क्या वेद में आर्य एवं आदिवासियों के युद्ध का वर्णन है?

-ले० शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

उपर्युक्त शीर्षक से आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् श्री वैद्य रामगोपाल जी आर्य ने सन् 1970 ई. में एक पुस्तक का प्रणयन किया था। पुस्तक के आरम्भ में ही उन्होंने सर्वप्रथम आर्य एवं दस्यु शब्द की व्युत्पत्ति बताई है। आर्य शब्द वेद में ईश्वर वाचक है, उससे 'तस्यापत्यम्' (अ.4.1.92) सूत्र के अण् प्रत्यय होकर अर्थ होगा-'अर्यस्य स्वामिन: ईश्वरस्य पुत्र:' जैसा कि निरूक्तकार ने 6.26 में लिखा है आर्य: ईश्वर पुत्र:। दूसरा आर्य शब्द 'तस्येदम्' (अ. 4. 3. 120) सूत्र से आर्य से अण् प्रत्यय होकर बनता है। इसका अर्थ होगा अर्यस्य स्वामिन: ईश्वरस्य वैश्वस्य इदम्-स्वामी ईश्वर अथवा वैश्य का अपना स्वधन।

फिर 'आर्य' शब्द ईश्वर वाचक है के प्रमाण में लिखा है-

यो अर्यो मर्त भोजनं परादद्ति दाशुषे।

इन्द्रो अस्मभ्यं शिक्षतु विभजा भूरिते वसु भक्षीय तव राधस:।

ऋ. 1.81.1.

अर्थ-जो (आर्य:) ईश्वर दानी पुरूषों को मनुष्यों के भोज्य पदार्थ प्रदान करता है, वह इन्द्र हमें भी भोजन पदार्थ देवे। हे इन्द्र। हम सबको बांटकर यह पदार्थ दो। हम आपके ऐश्वर्य का भोग करें। इसी प्रकार यास्काचार्य निर्मित निघण्टु 2.22 में 'आर्य' शब्द ईश्वर के नामों में पढ़ा है। राष्ट्री। आर्य:। नियुत्वान्। इन इन:। इति चत्वारि ईश्वर नामानि। फिर यवं वृकेणाश्विना बपन्तेर्ष दुहन्ता मनुषाय दस्रा। अभि दस्युबकुरेणा धमन्तोरू ज्योतिश्च-क्रथुरार्याय। निरूक्त 2.26

ऋ. 1.117.21.

मंत्र की व्याख्या में 'आर्य शब्द की व्याख्या करते हुए यास्काचार्य ने लिखा है-आर्य: ईश्वर पुत्र: अर्थात् आर्य ईश्वर के पुत्र का नाम।

पाणिनि ने तद्धित-प्रकरण के तस्यापत्याम् सूत्र (अ. 4.1.92) से और 'तस्यदेयं' (अ. 4.1.120) सूत्र से आर्य पद की सिद्धि की है। यास्काचार्य ने 'आर्य' शब्द को ईश्वर पुत्र के रूप में माना है। आर्य शब्द का ऋग्वेद में निम्न अर्थों में प्रयोग हुआ है।

यो नो दास आर्यो वा पुरूष्टुतादेव इन्द्र युधये चिकेतति।

ऋ. 10.38.3.

इस मंत्र में 'आर्य' शब्द शत्रु के लिए प्रयुक्त हुआ है। यहां इसका अर्थ है-'अभिगन्तव्य' वह महान् शत्रु जिस पर युद्ध के लिए अभिगमन (चढ़ाई) करना चाहिए। यह 'ऋ' गति प्रापणयो धातु से निष्पन्न होता है।

वित्वक्षण: समृतौ चक्रमा-सजो-ऽसुन्वतो विषुण: सन्वतो बृह:।

इन्द्रो विश्वस्य दमिता विभीषणो यथावशं नयति दासमार्य:।। ऋ. 5.34.6.

अर्थ-युद्ध में रथ चक्र को वेगवान् करता है। दुष्टों का नाश करने वाला इन्द्र अयजनशील से दूर रहता है। यजनशील की वृद्धि करता है। वह सब शत्रुओं का दमन करने वाला है। वह भयंकर है। वह आर्य इन्द्र अपनी इच्छानुसार दास अर्थात् विनाशकारी को अपने वश में कर लेता है।

टिप्पणी-यहां आर्य शब्द इन्द्र के विशेषण रूप में आया है।

आर्य सहो वर्धया द्युम्नामिन्द्र।

ऋ. 1.103.3.

यहां आर्य उत्तम गुण युक्त श्रेष्ठ व्यक्ति के लिए प्रयुक्त हुआ है।

हत्वी दस्यून प्रार्यं वर्णमावत्।।

ऋ. 3.34.9.

इस मंत्र में आर्य का अर्थ उत्तम गुण युक्त श्रेष्ठ पुरूष है।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।

ऋ. 9.63.5.

यहां आर्य का अर्थ कल्याणकारी है।

स्वर्मनवे ज्योतिरार्यम्।

ऋ. 10.43.4.

यहां आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ। यहां आर्य ज्योति के विशेषण में आया है।

आ योऽनयत्सधमा आर्यस्य।

ऋ. 7.18.7.

यहां आर्य का अर्थ है, श्रेष्ठ, कर्मशील पुरूष।

आर्यस्य वर्धनमग्निम्।

ऋ. 8.103.1

यहां पर 'आर्य' शब्द श्रेष्ठ, उत्तम गुण युक्त व्यक्ति के लिए आया है।

इत त्वा सद्य आर्यो।

ऋ. 4.30.18.

यहां आर्य शब्द दो शत्रुओं के विशेषण रूप में आया है।

जिसका अर्थ होगा 'अभिगन्तव्यो' जिन पर आक्रमण करना चाहिए ऐसे महान् शत्रु।

हतो बृत्राण्यार्या।

ऋ. 6.60.6.

इस मंत्र में 'आर्या' शब्द वृत्राणी की विशेषता है। यहां भी अर्थ होगा महान् शत्रु।

एते धामान्यार्या।

ऋ. 9.63.14.

इस मंत्र में 'आर्या' का अर्थ श्रेष्ठ उत्तम गुण युक्त पुरूष है।

तिस्र: प्रजा आर्या ज्योतिरग्रा।

ऋ. 7.33.7.

इस मंत्र में आर्या: बहुवचन है और प्रजा का विशेषण है। जिसका अर्थ है श्रेष्ठ।

वैश्वानर ज्योतिरिदार्याय।

ऋ. 1.59.2.

यहां आर्य पद उत्तम गुण युक्त विद्वान् मनुष्य के लिए आया है।

अहं भूमिमददामार्या य।

ऋ. 4.26.2.

इस मंत्र में 'आर्य' पर श्रेष्ठ गोपालक, कृषक के अर्थों में आया है।

आर्याय विशोऽवतारीर्दासी:।

ऋ. 6.25.2.

इस मंत्र 'आर्य' शब्द उत्तम गुण युक्त, यजनशील व्यक्ति के लिए प्रयुक्त हुआ है।

इस सम्पूर्ण विवरण से ज्ञात होता है कि आर्य मनुष्यों की कोई विशेष नस्ल न होकर श्रेष्ठ, यजनशील, विद्वान् तथा भयंकर शत्रु को कहा जाता है। अनार्य इन गुणों के विलोम गुणों से युक्त पुरूष को कहा जायेगा।

अनार्य शब्द ही कालान्तर में बदल कर अनाड़ी बन गया जिसका अर्थ होता है मूर्ख व्यक्ति। अब हम दास तथा दस्यु शब्दों के विषय में वेद के आधार पर विचार करते हैं-'दासति दासते वा य: स:' अर्थात् दान करने वाला 'दस्यति नाशयति य: स: दस्यु' अर्थात् जो नाश करता है वह दस्यु है। दस्यु शब्द का विविध रूप में प्रयोग हुआ है। ऋ. 1.51.8. में दस्यु शब्द आर्य के विलोम अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। ऋ. 10.22.8. में दस्यु शब्द अज्ञानी, अव्रती, मानवीय व्यवहार शून्य व्यक्ति के लिए प्रयुक्त हुआ है। ऋ. 1.59.6. में दस्यू मेघ के लिए प्रयुक्त हुआ है। निरूक्त 7.23. में भी इसे मेघ का विशेषण माना है।

अब हम ऋग्वेद में दास तथा दस्यु शब्दों के अर्थ पर विचारते हैं।

ऋ. 10.38.3. में कहा गया है-यो नो दास आर्यो वा। यहां दास शब्द उपक्षयकारी को कहा गया है। यो दासं वर्णमधरं गुहा क:। ऋ. 2.12.4. यहां दास शब्द वर्ण के विशेषण में आया है। यथा वशं नयति दासनार्य:। ऋ. 5.34.6. यहां पर हानि पहुंचाने वाले दुष्ट पुरूष के लिए 'दास' शब्द आया है।

दासं यच्छुष्णं कुयवम्।।

ऋ. 7.19.2.

यहां 'दास' शब्द शुष्ण के विशेषण में आया है। 'शुष्ण: शोष-यर्तातिं' अर्थात् शोषण करने वाला।

त्वं जघन्थ नमुचि मखस्युं दासम्। **ऋ. 10.73.7.**

यहां पर 'दास' नमुचि अर्थात् वर्षा न करने वाले मेघ के विशेषण के रूप में आया है।

अमर्त्यं चिद दासं मन्यमानम्।।

ऋ. 2.11.2.

यहां दास का अर्थ होगा महाविनाशकारी।

शिरोदास्य सं पिणग्वधेन।।

ऋ. 4.18.6. शिरो दासस्य का अर्थ है क्षीण मेघ।

सुमत्सु दासस्य नाम चित्।

ऋ. 5.33.4.

यहां दासस्य का अर्थ है वृष्टि का प्रतिबन्धक उपक्षयकारी मेघ।

वि जानीह्यार्यान्ये च दस्यव:।।

ऋ. 1.51.8.

यहां दस्यु पद आर्य के विलोम के अर्थ में आया है।

वज्रं जघन्थ दस्यवि।

ऋ. 8.6.14.

यहां पर 'दस्यु' पर शुष्ण नामक मेघ के विशेषण के रूप में आया है, इसका अर्थ है उपक्षयकारी।

दस्यवे सह:। ऋ. 1.36.18.

यहां दस्यु शब्द नव वास्त्व के विशेषण रूप में आया है। नव वास्तव मेघ का नाम है।

वि सव्यत: सादि दस्युरिन्द्र।।

ऋ. 2.1.18.

यहां पर दस्यु का अर्थ है विनाशकारी।

अकर्मा दस्युरभि नो अमन्तुर-न्यव्रतो अमानुष:। ऋ. 10.22.8.

इस मंत्र में 'दस्यु' पुरूष के लक्षणों का वर्णन है जो शुभ कर्म हीन, अज्ञानी और मानुषी व्यवहार से रहित है वह दस्यु है।

वैश्वानरो दस्युमग्नि-र्जघन्वान्।। **ऋ. 1.59.6.**

यहां पर 'दस्यु' शब्द का अर्थ है विनाशकारी।

वधेन दस्युं प्रहि चातयस्व।।

ऋ. 5.4.6.

इस मंत्र में वज्र से उपक्षयकारी दस्यु के नाश करने का वर्णन है।

त्वं नि दस्युं चुंमुरि धुनिं।।

ऋ. 7.19.4.

इसमें दस्यु का अर्थ विनाशकारी है और चुमुरि और धुनि नामक मेघों का विशेषण है।

येन देवासो असहन्त दस्यून्।

ऋ. 3.29.9.

इस मंत्र में श्रेष्ठ पुरूषों द्वारा दस्यु अर्थात् विनाशकारी पुरूषों के नाश का वर्णन है।

(क्रमश:)

वेद-विहार

अथर्ववेदाधिकरण

-ले० स्वर्गीय श्री शान्ति स्वरूप गुप्त

(गंताक से आगे)

अनु सूर्यमुदयतां हृद्योतो हरिमा च ते।

गो रोहितस्य वर्णन तेन त्वा परि दध्मसि।। १।२२।१

[हे रोगी, ते-तेरा, हृद्योत-हृदय चमकना, हरिमा च-शरीर के हरित चक्षु नखादि, सूर्यम् अनु-सूर्य उदय होते ही, उदयताम्-नाश हो, गो:-सूर्य की किरणें, रोहितस्य-रक्त, किरण (अथवा शाल्मली वृक्ष), वर्णेन-रोग, नाशक गुण अथवा फलरस, पुष्प, परि दध्मसि पुष्ट करते हैं।]

इस मन्त्र में पाण्डु रोग के शमनार्थ सूर्य की रक्त किरणें अथवा शाल्मली वृक्ष के सेवन का वर्णन है।

(३) अमूः पारे पृदाक्वः सेना-संचालन की कूट-नीति के विरुद्ध, सायण ने भूमि के पार नाग लोक को २१ सर्प-जातियों की केंचुली शत्रु की आँखों में डालें-यह हास्यास्पद अनर्थ कर दिया है।

अमूः पारे पृदाक्वस्त्रिषप्ता निर्जरायवः।

तासां जरायुभिर्वयमक्षया-३वपि वपिव्ययामस्यघायोः परिपन्थिनः।। अथर्व० १।२७।१

इसमें सर्प, प्रचालक (मोर की कलँगी), कृकण (बटेर) तथा पञ्चकुण्ठ के चर्म को सुखा कर उन्हें चूर्ण करके उसके धूम को शत्रु सेना में पहुँचा कर शत्रुओं के नेत्र की ज्योति नष्ट करने का विधान बताया है अथवा सर्पाकार व्यूह बनाकर शत्रु की आँखों में भ्रम डालने का विधान बताया है।

अक्ष्यौ अपि व्यायामसि-आँखों की ज्योति का नाश करें।

दूसरा विषय है मणि। प्रथम नौ काण्डों के लगभग ३० सूक्तों में सायणाचार्य ने मणि बाँधने का वर्णन किया है। उनके अनुसार किसी भी निर्दिष्ट पदार्थ की गोली या मनका बनाकर ताबीज़ के समान उसे कण्ठ, बाहु अथवा कटि प्रदेश आदि में आबद्ध करने का विनियोग है। साथ ही विभिन्न मणियों का वर्णन है।

अब यहाँ विचारणीय विषय है कि मणि के सम्बन्ध में वैदिक दृष्टिकोण क्या है? 'मणाति शब्दयतीति मणिः' उपदेश देने वाले लोग मणि कहलाते हैं। इस दृष्टि से गुरु, उपदेश और नेता आदि मणि के अन्तर्गत आ जाते हैं। अथर्ववेद में विभिन्न मणियों का वर्णन है-कृष्णाल, शुक्ल, वीरणेष, अभीवर्च, हिरण्य, जाङ्गिड्, यव, दशवृक्ष, स्राक्य, तिलक, अश्वत्थ, हरिण-शृङ्ग, सिंहनाभि, अरलु, शरमणि आदि।

कृष्णाल मणि-

अस्मिन् वसु वसवो धारयन्त्विन्द्रः पूषा वरुणो मित्रो अग्निः।

इममादित्या उत विश्वे च देवा उत्तरस्मिन् ज्योतिषि धारयन्तु।।

-अथर्व० १।६।१

सायण ने इसके अर्थ में कृष्णाल मणि धारण करने के सम्बन्ध में लिखा है। किन्तु इस सूक्त के चारों मन्त्रों में कहीं भी मणि शब्द का उल्लेख नहीं है। वास्तव में इस सूक्त का प्रयोग राष्ट्र-च्युत नृप को पुनः सिंहासनारूढ़ करने में प्रयुक्त हुआ है। साथ ही राजा को शक्तिशाली होने का उपदेश भी है। शब्दार्थ निम्नलिखित प्रकार से है।

अस्मिन्-इस राजा को, वसवः-अष्टावसु, वसु-तेज, ऐश्वर्य, धारयन्तुःधारण करावे, इन्द्र-ऐश्वर्य-युक्त, वरुणः-सर्वश्रेष्ठ, मित्र-सब के मित्र, अग्नि-सर्वप्रकाशक, आदि-त्याः द्वादश आस, उत च-और, विश्वेदेवाः-विद्वान् पुरुष, इमं-इस राजा को, उत्तरस्मिन्-उत्कृष्ट, ज्योतिषि-राज्य, ऐश्वर्य, धारयन्तु-धारण करावें।

शुक्ल वीरणेष का मणि

उप प्रागाद् देवो अग्नी रक्षोहामी-वचातनः।

दहन्नप द्वयाविनो यातुधानान् किमीदिनः।। २।२८।१

देव, प्रकाशमान्, रक्षोहा-राक्षसों के विनाश, अमीवचातनः-रोगों के कीटाणु-नाशक, उपप्रागाद्-हमें प्राप्त हो, किमीदिन-परहर्ता, यातुधान-पीडाकारी, द्वयाविनः-वाणी एवं कर्म में क्रूर, अपदह-ऐसे पुरुषों को दण्डित करें।

सायण ने उद्विग्न पुरुष का उद्वेग दूर करने के लिए सरकण्डे की चार सींकें लेकर आबद्ध करने का विधान लिखा है जिसका मन्त्र में कही भी संकेत नहीं है।

अभीवर्त्तमणि वा रथचक्रनेनिर्मणि अथवा रथनेमि-

अभीवर्त्तेन मणिना येनेन्द्रो अभिवावृधे। तेनास्मान् ब्रह्मणस्पते-ऽभिराष्ट्राय वर्धय।

अभिवृत्य सपत्नानभि या नो अरातयः। अभि पृतन्यन्तं तिष्ठाभि यो नो दुरस्यति।।

अभीवर्त्तमणि-

अथर्व० १।२६।१२

यः-जो, सपत्नान्-हमारी सम्पत्ति या आक्रमणकारी शत्रुओं को, अभिवृत्य-चारों ओर से घेर कर जो, नः-हमारे, अरातयः-कर अदाता, पृतन्यन्तं-आक्रमणकारी सेना, अभितिष्ठ-सामना करके, यः-जो, नःहमें, दुरस्यति-दुःखदायी उन क्रूर मनुष्यों को, अभितिष्ठ-वश में करो। अर्थात् ससैन्य वह राजतक, जो आक्रमण करके शत्रु-संहार करता है, वह अभीवर्तमणि कहलाता है।

कौशिक के मतानुसार विजय-प्राप्ति की कामना से लौह, सीसा, रजत एवं ताम्र से पिरोया हुआ मणि राजा गले में आबद्ध करे। पर यह विचारणीय विषय है कि इस अँगूठी से किस प्रकार विजय हो सकती है?

किन्तु इस सम्बन्ध में वेद का प्रतिपाद्य विषय यह है-(येन मणिना इन्द्रः अभिवावृधे) जिस मणि से ऐश्वर्यशील राजा उन्नति प्राप्त करता है।

(ब्रह्मणस्पते तेन अभीवर्तेन राष्ट्राय अस्मान् वर्धय) शत्रुओं को दलित करके, जो सर्वप्रकारेण राज्य सुरक्षित रख सके, वह नरमणि, अभीवर्त्तमणि है। (मह्यम् राष्ट्राय सपत्नेभ्यः पराभवे बाध्यताम्-अथर्व० १।१६।४) शत्रुओं से सुरक्षा के लिए राष्ट्र में जिसे नियुक्त किया जाय।

जंङ्गिड मणि-

सायण के मतानुसार अर्जुन वृक्ष की लकड़ी आत्मरक्षार्थ एवं विघ्नों के शमन के लिए बाँधनी चाहिए। परन्तु वेद का प्रतिपाद्य विषय यह है (दक्षमाणा रणाय अरिष्यन्तः सदैव विभृमः) युद्ध में शत्रुओं पर बल प्रयोग के समय इसकी आवश्यकता होती है। वह स्वयं (सहस्रवीर्यः अथर्व०) सहस्त्रशक्ति सम्पन्न होता है। अतः युद्धकाल में (व्यायाम सर्वारक्षांसि सहामहे) दुष्ट शत्रुओं को पराजित करता है। अतः इस मणि से वेद स्पष्ट करता है कि नरशिरोमणि सेनानायक कैसा होना चाहिए? इसी प्रकार अन्य मणियों के सम्बन्ध में भी मानना चाहिए। इन मणियों का अर्थ-राज्य-संचालन, शत्रु-पराजय, सेनापति का चुनाव एवं उनके कर्त्तव्य आदि से संबन्धित है।

कृत्या

सायण के अनुसार 'मन्त्रौषधादिभिः'-शत्रुओं की पीड़ा देने वाली कृत्या होती है। कृत्या निखन्नार्थ गच्छेत्-कोई मनुष्य इस कृत्या को गाड़ने के लिए जावे।

'कृत्या अभिचारकर्मभिरुत्पादिताः पिशाच्यः।'

[अभिचार कर्मों से उत्पादित पिशाचिनी कृत्याएँ हैं]। वेद में चार प्रकार की कृत्याएँ बतायी गई हैं-

याः कृत्या आङ्गिरसीयाः कृत्या आसुरीर्याः कृत्याः, स्वयं कृता या उ चान्येभिराभृताः उभयीस्ता।

परा यन्तु परावतो नवति नाव्या३अति। अथर्व० ८।५।६

(याः) जो, (कृतायाः) संहारकारी क्रियाएँ (आंगिरसी) वैज्ञानिकों द्वारा बताई हुई, (याः कृत्या आसुरी) शक्तिशाली पुरुषों-द्वारा प्रयोग में लायी हुई, (याः कृत्याः स्वयं कृता) जो हिंसात्मक कार्य प्रजा स्वयं करती है, (या उ अन्येभिः) वे संहारकारी क्रियाएँ जो शत्रुओं द्वारा प्रयोग में लायी जाती है, वे दोनों आधिदैविक, आधिभौतिक विपत्तियाँ दूर चली जावें।

दूसरे मन्त्र में इसका रूप यह है-

विभिन्दती शतशाखा विभिन्दन् नाम ते पिता।

प्रत्यग् विभिन्धि त्वं तं यो अस्मां अभिदासति।

अथर्व० ४।१६।५

[तू सौ शाखाओं में फूटती है। तेरा पिता नाना शाखाओं में फूटने वाला है। तू हमारे आक्रमणकारी शत्रु को तोड़ फोड़ दे।]

इसके आगे मन्त्र में कहा गया है-

असद् भूम्याः समभवत् तद्यमेति महद् व्यचः।

तद् वै ततो विधूपायात् प्रत्यक् कर्त्तारमृच्छतु।।

अथर्व० ४।१६।६

[भूमि पर सामान्य छोटे रूप में रहने वाला पदार्थ आकाश में विस्तृत होकर प्रज्वलित होता हुआ विरोधियों का नाश करता है।]

उपर्युक्त मंत्रों से प्रतीत होता है कि वास्तव में ये कृत्याएँ कोई बृहत्काय बम की परिचायिका हैं जिनका आकाश में जाकर विस्फोट होता है और ये शत भागों में विभक्त होकर प्रजा का नाश करती हैं। इनमें से निकलने वाले छर्रों को पिशाची की संज्ञा दी गई है। किन्तु सायण के अनुसार 'सहदेवी' बूटी का ताबीज़ बनाकर व्यवहृत करने पर शत्रुओं का नाश होता है।

अथर्ववेद के दसवें काण्ड में पुनः कृत्याओं का वर्णन है-

शूद्रकृता राजकृता स्त्रीकृता ब्रह्मभिः कृता।

जाया पत्या नुत्तेव कर्त्तारं बन्ध्वृच्छतु।। अथर्व० १०।१।३

[पत्यामुत्ता आया इव-पति से अपमानित स्त्री की भाँति जो अप्रसन्न होकर अपने पितृकुल में वापिस चली जाती है, शूद्रकृता, राजकृता स्त्रीकृता ब्रह्मभिः कृत्या, बन्धु-बन्धु के समान, कर्त्तारं इच्छतु-अपने प्रयोगकर्त्ता के पास वापस लौट आती है।] **(क्रमशः)**

पृष्ठ 2 का शेष-स्तुति प्रार्थना...

चन्द्र और सूर्य की शोभा-सौंदर्य अद्भुत है। हम भारतीयो को यह समस्त तारामण्डल बहुत आल्हादकारी लगता है। भोर का तारा, ध्रुव तारा और उसकी चौकड़ी। कुछ इस्लाम अनुयायियों को दूध का चांद पंसद है। हमें पूर्णिमा का, वह भी विशेषकर शरद ऋतु का, जिसके लिये कहा जाता है कि परमात्मा इस रात्रि, चन्द्र किरणों के रूप में, अमृत की वर्षा करता है। इसलिये शरद-पूर्णिमा को, खुले आकाश में दूध रखकर अमृत संजोया जाता है और मध्यरात्रि के बाद दान करने की परम्परा रही है।

चन्द्र की आभा रसभरी और शांतिदायक है; वहीं सूर्य की प्रभा ओजमयी है ऊर्जावान है। माधुर्य रस का सम्पूर्ण उपयोग भी ऊर्जावान प्राणी ही कर सकता है और करा सकता है। पुरुष ओज का प्रतीक है और नारी शांति और माधुर्य की। सभी जीवधारियों में ओजवान नर ही सौंदर्य का प्रतीक होता है।

सूर्योदय और सूर्यास्त दोनो संधि बेलाएं कही जाती हैं क्योंकि सूर्य और पृथिवी की आभा का मिलन होता है। सम्पूर्ण वातावरण में अजीब शान्त, निस्तब्धता हटा जाती है। पक्षिगण कलख करते हुए क्षितिज में उड़ान भर रहे होते है या नीड़ों की ओर लौट रहे होते हैं। चित्तवृत्ति निरोध का अदभुत समय। परमेश्वर की सृष्टि रचना के अदभुत सौन्दर्य को देखने का, अनुभव कर उसके चिन्तन-मनन में मगन होने का समय, इसीलिये महर्षि दयानन्द ने इन दो संधिवेलाओं में ही ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का विधान किया है जो वेद सम्मत भी है। जरा सोचिए तो, जिस सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, निराकार ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का विधान महर्षि दयानन्द ने किया है, वह मिट्टी, कागज, प्रस्तर, अथवा धातुओं की मूर्तियों के समक्ष हाथ जोड़ कर खड़े होने पुष्प-पत्र, प्रसाद, चढ़ा कर पूजा करने से पूरा हो सकता है? यां अवतारी महापुरुषों को स्मरण कर जो अजर, अमर नित्य नहीं? या उन अत्यन्त वैभवशाली मूर्तियों के समक्ष जहां 5-10 सैकण्ड में उन्हें धकेल दिया जाता है, से हो सकता है? निर्णय आपको स्वयं को करना है स्वं विवेक को जुषुप्ति से बाहर निकालिए, जाग्रत कीजिए, प्रदीप्त कीजिए, निर्णय वह कर लेगा।

प्रिय ध्रुव का उपनयन संस्कार एवं वार्षिक उत्सव तथा शारद यज्ञ का आयोजन

प्रिय आर्य बन्धुओं ! आप सभी को सूचित करते हुए अति हर्ष हो रहा है कि पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी की तपस्थली महर्षि दयानन्द मठ चम्बा का 37वां वार्षिक उत्सव प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी 18 सितम्बर 20 सितम्बर 2017 तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर 20 सितम्बर को पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी की धरोहर, स्व. श्री आचार्य ऋषि के सुपुत्र एवं उसकी आशाओं के केन्द्र एवं इस संस्थान के भविष्य हमारे प्रिय पौत्र आयुष्मान् ध्रुव का उपनयन संस्कार किया जाएगा। इस अवसर पर आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान्, सन्यासी एवं भजनोपदेशक उपस्थित होंगे। इन्हीं पूज्यों महानुभावों की छत्रछाया में यह उपनयन संस्कार सम्पन्न होगा। 21 सितम्बर से 22 सितम्बर तक इसी पावन तपोस्थली में स्वामी जी महाराज के प्रिय शारद यज्ञ का आयोजन किया जाएगा। आर्य बन्धुओं! दयानन्द मठ चम्बा हमेशा ही आर्य समाज की गतिविधियों का केन्द्र रहा है। इस पावन संस्थान में जहां पर विश्वकल्याणार्थ यज्ञ जैसे श्रेष्ठ कर्मों का आयोजन किया जाता है, वहीं परोपकार के कार्यों में भी यह संस्थान हमेशा तत्पर रहता है। हर तीसरे महीने यहां पर आँखों का कैम्प लगाया जाता है जिसमें आँखों का फ्री चैकअप तथा मुफ्त में ऑपरेशन किए जाते हैं। महर्षि दयानन्द मठ चम्बा का अपना एक ऑपरेशन थियेटर बना हुआ है। चम्बा के दूरदराज ग्रामीण ईलाकों से लोग आकर इस सुविधा का लाभ उठाते हैं। बन्धुओं! यह सब कार्य आप सब के पावन सहयोग से ही सम्पन्न होते हैं। पूज्य स्वामी जी महाराज का आशीर्वाद एवं आप सभी का पावन सहयोग ही मेरा उत्साहवर्धन करते हैं। जिसके परिणामस्वरूप मैं सभी चिन्ताओं से मुक्त होकर दिन-रात संस्थान की उन्नति के लिए प्रयासरत रहता हूँ। यह एक ऐसा संस्थान है जो इतने दुर्गम स्थान पर होने के बावजूद तथा सुविधाओं के अभाव में भी अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर आगे बढ़ने के लिए प्रयासरत है। आप सभी से विनम्र निवेदन है कि महर्षि दयानन्द मठ चम्बा के इस वार्षिक उत्सव में अपनी-अपनी संस्थाओं, अपने परिवार तथा इष्टमित्रों सहित पधार कर इस संस्थान के कार्यों में तन-मन-धन से सहयोग करें।

आचार्य महावीर सिंह अध्यक्ष दयानन्द मठ चम्बा

श्री कृष्ण जन्मोत्सव

आर्य समाज मन्दिर कमालपुर होशियारपुर में दिनांक 13-08-2017 (रविवार) को श्री कृष्ण जन्माष्टमी की पूर्व सन्ध्या पर एक विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। प्रो. एन. के. शर्मा, प्रो. यशपाल वालिया और श्री कुलदीप आहलुवालिया (सपत्नी) ने यजमान पद को ग्रहण किया। इस अवसर पर नगर से आर्यजनों ने भी यज्ञ में आहुतियां डालीं। आचार्य भद्रसेन जी ने सभी को आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् श्री कृष्ण जन्मोत्सव का कार्यक्रम चला। श्रीमती बिमला भाटिया और श्रीमती संगीता शर्मा ने सुन्दर भजन सुनाये।

मंच का संचालन करते हुए प्रो. यशपाल वालिया ने श्री कृष्ण को युग पुरूष बताया और कहा कि उनके द्वारा परिचारित नीति और दर्शन ही शाश्वत धर्म है। अपने मुख्य उद्बोधन में डा. प्रो. पी. एन. चोपड़ा ने कहा कि श्री कृष्ण ने ईश्वर को साक्षात प्राप्त किया और भागवत गीता में मानव को स्थित प्रज्ञ रहते हुए खुशी-खुशी प्रेम से जीवन बिताने का संदेश दिया। साथ ही यह भी कहा कि जीवन के संग्राम में हाथ पर हाथ रख कर बैठे रहने की बजाये वीरता से शक्ति का प्रयोग करना चाहिये। अंत में प्रो० के. सी. शर्मा ने उपस्थित आर्यजनों का धन्यवाद किया। बच्चों को लेखन सामग्री बांटी गई और प्रसाद भी बटा।

-आर्य समाज कमालपुर, होशियारपुर

महाशा चेत राम आर्य मैमोरियल इन्स्टीच्यूट में कौशल विकास मेला

महाशा चेत राम आर्य मैमोरियल टैक्नीकल इन्स्टीच्यूट धूरी में इन्स्टीच्यूट के प्रधान श्री प्रहलाद कुमार जी, उप प्रधान आरती तलवार जी, मैनेजर पवन कुमार जी, इन्स्टीच्यूट प्रिंसीपल निशा मित्तल जी और समूह महाशा चेत राम आर्य मैमोरियल टैकनीकल इस्स्टीच्यूट की कमेटी की तरफ से "प्रधान मंत्री कौशल विकास योजना मेला" आयोजित किया जायेगा। इस योजना का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को उनके कौशल को उजागर करने के लिए सुनहरी मौका देना है। इस योजना से हमें यहाँ हमारे धूरी इलाके की बेरोजगारी दूर करने में हमें सहायता मिलेगी, वहीं हमें अपना आर्य समाज का उद्देश्य पूरा करने का भी मौका मिलेगा। हमारे इन्स्टीच्यूट में हम टैलीकाम सैक्टर में, रिटेल सैक्टर में, कम्प्यूटर सैक्टर में, आई. टी. सैक्टर में और डाटा एंटरी आपरेटर के सैक्टर में और विभिन्न कोर्सो को करने के लिए हम अपने इन्स्टीच्यूट में विद्यार्थियों को आमंत्रित कर रहे हैं। कृप्या हमारा सहयोग करें।

हर्षोल्लास से अध्यापक दिवस मनाया गया

आर्य गर्ल्ज सी० से० स्कूल के प्रांगण में अध्यापक दिवस बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर स्कूल के प्रधान श्री अनिल अग्रवाल जी सपरिवार, मैनेजर श्री निहाल चन्द सचदेवा जी, उपप्रधान श्री सुरिन्द्र गर्ग जी, अन्य कमेटी मैंबर्स, प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता एवम् स्टाफ तथा बच्चे शामिल हुए। इस समारोह के शुभांरभ गायत्री मंत्र से किया गया। इस दिन बच्चों ने अध्यापिकाओं के सम्मान में रंगारंग कार्यक्रम पेश किया। नन्हें बच्चों ने स्वागत गीत गाकर मैनेजमैंट, प्रिंसीपल तथा स्टाफ का स्वागत किया। छोटे-छोटे बच्चों ने भी गुरू के महत्व पर बहुत ही सुन्दर कविताएँ सुनाई। मंच का संचालन श्रीमती चन्द्रकान्ता मैडम ने किया। मैनेजर श्री निहाल चन्द जी ने सभी अध्यापिकाओं को अपनी शुभकामनाएँ दी और उन्होंने कहा कि ये दिन हमारे समाज के लिए बहुत जरूरी होता है। इस दिन शिक्षकों को सम्मान देकर उनका मनोबल बढ़ाते है और उनके काम की सराहना करते है। बच्चों को एक अच्छा व्यक्ति बनाने के लिए एक शिक्षक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उपप्रधान श्री सुरिन्द्र गर्ग जी ने गुरू के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बच्चों को अपने गुरू का सम्मान करना चाहिए शिक्षक ही विद्यार्थियों का भविष्य संवार सकते है। प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता जी ने बच्चों द्वारा पेश किए गए कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए उनका उत्साह बढ़ाया और उन्होंने विद्यार्थियों को मन लगाकर पढ़ने और गुरू का सम्मान करने के लिए प्रेरित किया। स्कूल की पूर्व छात्रा वीना कथूरिया ने स्कूल विकास के लिए 21000/- रूपये का चैक दिया। सभी बच्चों को स्कूल प्रधान जी की तरफ से स्वीटस बाँटी गई तथा सभी अध्यापिकाओं को अध्यापक दिवस पर तोहफा देकर सम्मानित किया गया। अन्त में शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम को समाप्त किया गया।

बीएलएम गर्ल्ज कालेज नवांशहर में संस्कृत दिवस मनाया

बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज नवांशहर में संस्कृत दिवस के अवसर पर सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी डा. प्रतिभा शुक्ला का स्वागत करते हुये। उनके साथ खड़े हैं वयोवृद्ध आर्य नेता श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल। जबकि दूसरे चित्र में कालेज के प्रधान सी. एम. भण्डारी, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज, डा. प्रतिभा शुक्ला जी, प्रधानाचार्य तरनप्रीत कौर, कालेज के सचिव श्री विनोद भारद्वाज जी खड़े हैं।

बीएलएम गर्ल्ज कालेज राहों रोड नवांशहर में 8 सितम्बर 2017 को संस्कृत दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री प्रेम भारद्वाज जी महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब विशेष रूप से पधारे। उनके साथ वयोवृद्ध आर्य नेता श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज नवांशहर के सचिव श्री विनोद भारद्वाज, अमित कुमार शास्त्री, प्राचार्य तरनप्रीत कौर भी उपस्थित थे। मुख्य वक्ता डा. प्रतिभा शुक्ला एसोसिएयट प्रोफैसर संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार ने कहा कि हमारे मन के दोष ही हमारे शत्रु हैं। अहंकार को छोड़ कर ही हमारे व्यक्तित्व का विकास होता है। सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज ने कहा कि धर्म के विषय में अनेक भ्रान्तियां हैं, धर्म का अर्थ है अपना कार्य ठीक और बेहतर तरीके से करना। कालेज के सचिव श्री विनोद भारद्वाज जी ने कहा कि संस्कृत भाषा ही हमें ऊंचाई तक ले जा सकती हैं। प्रिंसीपल तरनप्रीत कौर वालिया ने कहा कि शास्त्रों में विद्या से रहित मनुष्य को पशु समान बताया गया है। कार्यक्रम के दौरान संस्कृत ज्ञान प्रतियोगिता करवाई गई जिसमें गंगा, यमुना, सरस्वती, सरयू बनाये गये। सभी संस्कृत के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तरी के सवाल जवाब दिये। इस प्रतियोगिता में सरस्वती वर्ग रजनी, प्रभदीप कौर प्रिया ने पहला स्थान, गंगा वर्ग में रवीना, नीलम, दलजीत ने दूसरा तथा यमुना वर्ग में प्रभजोत, गगनदीप व अमन प्रीत ने तीसरा स्थान पाया। मौके पर सुमन राजपाल, सुरिन्द्र कौर, निवेदित्ता, डा. अरुणा शुक्ला, ओंकार सिंह, ब्रह्म प्रकाश, डा. गौरी, डा. अरुणा पाठक आदि उपस्थित रहे। सभी छात्राओं ने प्रतियोगिता में बेहतर प्रतिभा दिखाई। सभी विद्यार्थियों ने बड़ी विलक्षण प्रतिभा का सबूत देते हुये सभी प्रश्नों के उत्तर देकर जनरल नॉलेज का सबूत दिया।

आर्य समाज संत नगर जालन्धर का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज संत नगर जालन्धर के वार्षिक उत्सव पर सभा कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी का स्वागत करते हुये सभा के उप प्रधान श्री सुरदारी लाल जी आर्य एवं आर्य समाज के सदस्य। जबकि चित्र दो में ध्वजारोहण करते हुये श्री निर्मल कुमार मंत्री आर्य समाज बस्ती बाबा खेल। उनके साथ खड़े हैं श्री पंडित मनोहर लाल जी आर्य एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी, सतपाल काले, जय चंद, सुरिन्द्र मोहन।

आर्य समाज वेद मन्दिर संत नगर, बस्ती शेख जालन्धर का वार्षिक उत्वस 01 सितम्बर से 03 सितम्बर तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। 1 और 2 सितम्बर को शाम 7 बजे से 9 बजे तक भजन संध्या का आयोजन किया गया जिसमें पं. विजय कुमार शास्त्री जी के सुन्दर प्रवचन द्वारा वेदोपदेश तथा श्री सुरिन्द्र कुमार बस्ती वावा खेल तथा माता सत्या और कान्ता जी के मधुर भजनों ने सभी धर्मप्रेमियों को मोहित कर दिया। 3 सितम्बर 2017 को मुख्य कार्यक्रम सुबह 9:30 बजे विश्व शान्ति महायज्ञ के साथ शुरू हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा पं. विजय कुमार शास्त्री तथा पं. मनोहर लाल जी ने यज्ञ को सम्पन्न कराया। यज्ञ के पश्चात आर्य समाज बस्ती वावा खेल के मन्त्री श्री निर्मल आर्य जी के द्वारा ध्वजारोहण किया गया।

ध्वजारोहण के पश्चात मुख्य कार्यक्रम आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न जी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। इस कार्यक्रम में सांसद श्री संतोख चौधरी, श्री महिन्द्र भगत, पं. मनोहर लाल, पं. विजय कुमार शास्त्री तथा श्री सुरेश कुमार शास्त्री जी ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सरदारी लाल जी आर्यरत्न ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि सभी को एकजुट होकर आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाना चाहिए। आज समाज में जो पाखण्ड और अंधविश्वास फैल रहा है, बाबाओं के जाल में लोग फंस रहे हैं, उसे दूर करने के लिए महर्षि दयानन्द की विचारधारा को घर-घर तक पहुंचाना होगा।

इस कार्यक्रम में सभी आर्य समाजों के प्रधान व सदस्यों ने बड़ी संख्या में भाग लेकर अपना अति सहयोग दिया। आर्य समाज वेद मन्दिर संत नगर बस्ती शेख जालन्धर के प्रधान श्री जयचन्द भगत, कोषाध्यक्ष श्री सतपाल काले, मन्त्री श्री हरीश कुमार, वरिष्ठ उपप्रधान श्री वीर भान, उपप्रधान श्री नरेश कुमार, पुरोहित पं. शशिकान्त, उपमन्त्री श्री राजेश कुमार, वरिन्द्र कुमार, श्री दिनेश सोनी, श्री विजय कुमार, श्री सुरिन्द्र मोहन, श्री संदीप कुमार, श्री प्रदीप कुमार, श्री विकास भगत, अजय भगत, संदीप भगत, साहिल, रितिश तथा अन्य सभी सदस्यों ने विशेष सहयोग दिया। कार्यक्रम में भारी संख्या में लोगों ने भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया। अन्त में आर्य समाज के प्रधान ने आये हुये महानुभावों का धन्यवाद किया। शान्तिपाठ एवं ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

जय चन्द प्रधान
आर्य समाज संत नगर जालन्धर

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।